SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखंड के चतरा जिले में जनजाति पर्यटन की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ: एक भौगोलिक अध्ययन

प्रदीप कुमार सिंह, पी–एचडी, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत
पंकज कुमार, शोधार्थी, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
प्रदीप कुमार सिंह, पी–एचडी
पंकज कुमार, शोधार्थी
E-mail : pradeepmcc25@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/11/2025
Revised on : 02/01/2026
Accepted on : 12/01/2026
Overall Similarity : 00% on 03/01/2026

शोध सार

झारखंड राज्य का चतरा जिला, जिसे छोटानागपुर का प्रवेश द्वार कहा जाता है, अपनी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति और नृवंशविज्ञान विविधता के लिए प्रसिद्ध है। जिले की लगभग 33 प्रतिशत जनसंख्या जनजातीय है, जिसमें आदिम जनजाति बिरहोर की उपस्थिति इसे मानवशास्त्रीय शोध और पर्यटन का केंद्र बनाती है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य चतरा जिले में जनजाति पर्यटन की संभावनाओं का मूल्यांकन करना, प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों का वर्गीकरण करना और स्थानीय समुदायों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान में पर्यटन की भूमिका का विश्लेषण करना है। शोध के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि इको–ट्राइबल सर्किट के माध्यम से चतरा को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया जा सकता है, बशर्ते सुरक्षा और बुनियादी ढाँचे की चुनौतियों का समाधान किया जाए।

मुख्य शब्द

जनजाति पर्यटन, बिरहोर, सतत् आजीविका, सांस्कृतिक पारिस्थितिकी.

विषय का परिचय और पृष्ठभूमि

पर्यटन वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक अनिवार्य स्तंभ बन चुका है। आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के लिए पर्यटन अब केवल स्थान–परिवर्तन का विषय नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक विनिमय और आर्थिक भूगोल के अंतर्संबंधों का अध्ययन है। इसी व्यापक परिदृश्य में 'जनजाति पर्यटन' एक विशिष्ट विधा के रूप में उभरा है। यह पर्यटन उन क्षेत्रों और समुदायों

पर केंद्रित है जो आधुनिक औद्योगिक समाज की जटिलताओं से दूर, प्रकृति के साथ एक आदिम और शुद्ध सहजीवी संबंध में निवास करते हैं।

झारखंड राज्य, जिसका शाब्दिक अर्थ ही वनों का प्रदेश है, जनजातीय संस्कृति की वैश्विक प्रयोगशाला है। यहाँ की मिट्टी में प्राचीनता और आधुनिकता का एक अनूठा द्वंद्व देखने को मिलता है। झारखंड के उत्तर–पश्चिमी छोर पर स्थित चतरा जिला, जिसे ऐतिहासिक रूप से छोटानागपुर का प्रवेश द्वार कहा जाता है, अपनी दुर्गम पहाड़ियों, सघन वनों और विरल जनजातीय बस्तियों के कारण शोध का एक महत्वपूर्ण विषय है। चतरा का जनजाति पर्यटन केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह इस क्षेत्र के लाल गलियारे वाली ऐतिहासिक पहचान को बदलकर इसे सांस्कृतिक गलियारे के रूप में पुनर्स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है।

चतरा जिले में पर्यटन का विकास अब तक मुख्य रूप से धार्मिक पर्यटन (इटखोरी) तक ही सीमित रहा है। शोध का अभाव इस बात में दिखता है कि यहाँ की 'आदिम जनजाति' बिरहोर और अन्य जनजातीय समूहों के सांस्कृतिक वैभव को मुख्यधारा के पर्यटन मानचित्र पर स्थान नहीं मिल पाया है। वैश्वीकरण के इस दौर में जनजातीय संस्कृतियाँ तेजी से लुप्त हो रही हैं। अतः, यह शोध न केवल पर्यटन की संभावनाओं को तलाशता है, बल्कि यह सांस्कृतिक संरक्षण के लिए एक वैज्ञानिक आधार भी प्रस्तुत करता है। चतरा की भौगोलिक विषमता और आर्थिक पिछड़ापन इसे जनजाति पर्यटन के विकास हेतु एक आदर्श चुनौती प्रदान करते हैं।

अकादमिक स्तर पर जनजाति पर्यटन को तीन प्रमुख सिद्धांतों के आधार पर समझा जा सकता है, जो इस शोध–पत्र का आधार हैं:

- **नृवंशविज्ञान सिद्धांत:** यह पर्यटकों की उस जिज्ञासा पर आधारित है जिसमें वे मानव विकास के प्रारंभिक चरणों और विलुप्त होती परंपराओं को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना चाहते हैं। चतरा के बिरहोरों का 'टांडा' (बस्ती) और उनकी शिकार–संग्रहण पद्धति इस सिद्धांत का सजीव उदाहरण है।
- **सतत् पर्यटन मॉडल:** यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि पर्यटन विकास ऐसा हो जो पर्यावरण और स्थानीय संस्कृति को क्षति पहुँचाए बिना आर्थिक लाभ सुनिश्चित करे। चतरा के सघन वनों में ''मास टूरिज्म'' के बजाय इको–टूरिज्म इसी मॉडल का हिस्सा है।
- **समुदाय आधारित पर्यटन:** इस सिद्धांत के अनुसार, पर्यटन का लाभ सीधे तौर पर जनजातीय समुदायों को मिलना चाहिए। यह मॉडल बिचौलियों के शोषण को समाप्त कर स्थानीय लोगों को स्टेकहोल्डर बनाता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- चतरा जिले के भौगोलिक और जनजातीय जनसांख्यिकीय ढांचे का सूक्ष्म विश्लेषण करना।
- जनजातीय हस्तशिल्प, लोक–कला और वनोपज आधारित पर्यटन के आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- क्षेत्र में पर्यटन विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं (सुरक्षा, ढांचागत अभाव, जागरूकता) की पहचान कर उनके समाधान हेतु रणनीतिक सुझाव देना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

- **द्वितीयक आंकड़े:** जनगणना 2011 (चतरा जिला हैंडबुक), झारखंड पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट, जिला गजेटियर, और पूर्व में प्रकाशित शोध–पत्र।
- **प्राथमिक प्रेक्षण:** चतरा के टंडवा, सिमरिया और इटखोरी प्रखंडों के कुछ जनजातीय क्षेत्रों का भ्रमण कर स्थानीय समुदायों और पर्यटन की स्थिति का प्रत्यक्ष अवलोकन।

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक अवस्थिति

चतरा जिला 23.92^0 उत्तर अक्षांश और 84.87^0 पूर्व देशांतर के मध्य स्थित है। यह उत्तर में बिहार के गया जिले, दक्षिण में हजारीबाग और रांची, पूर्व में हजारीबाग और पश्चिम में पलामू जिले से घिरा हुआ है। यहाँ की भू–आकृति ऊबड़–खाबड़ पठारी है, जहाँ ''उतरी कोयल'' और ''अमानत'' जैसी नदियाँ बहती हैं। जिले का लगभग 60.4 प्रतिशत क्षेत्र वनों से ढका है, जो झारखंड के अन्य जिलों की तुलना में अत्यधिक है। यही वन क्षेत्र और पहाड़ियाँ (जैसे कौलेश्वरी पर्वत) यहाँ की जनजातियों के लिए पारिस्थितिकी आश्रय का कार्य करती हैं, जो पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

जनजातीय जनसांख्यिकीः एक सांख्यिकीय अवलोकन

चतरा जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना में जनजातीय समुदाय की भूमिका केंद्रगामी है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार, चतरा की कुल जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अनुसूचित जनजातियों का है। यद्यपि पलामू या लोहरदगा की तुलना में यहाँ प्रतिशत कम प्रतीत हो सकता है, किंतु यहाँ की विशेषता जनजातीय विविधता है। चतरा में लगभग 15 से अधिक जनजातीय समूह निवास करते हैं, जिनमें मुंडा, उरांव, संथाल, बिरहोर, परहिया, और खरवार प्रमुख हैं।

भौगोलिक दृष्टि से, जनजातीय जनसंख्या का वितरण जिले के दक्षिणी और पश्चिमी प्रखंडों (जैसे टंडवा, सिमरिया, और लावालांग) में अधिक सघन है। इन क्षेत्रों की दुर्गम पहाड़ियाँ और सघन वन इन समुदायों को एक श्सांस्कृतिक कवचश् प्रदान करते हैं, जो उन्हें बाहरी हस्तक्षेप से बचाते हुए अपनी आदिम परंपराओं को अक्षुण्ण रखने में मदद करते हैं।

बिरहोर जनजातिः चतरा का नृवंशविज्ञान गौरव

चतरा जिले में जनजाति पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील स्तंभ बिरहोर समुदाय है। बिरहोर शब्द का शाब्दिक अर्थ है जंगल के लोग (बिर=जंगल, होर=आदमी)। इन्हें भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- **भौगोलिक संकेंद्रणः** बिरहोर मुख्य रूप से चतरा के टंडवा, इटखोरी, सिमरिया और हंटरगंज प्रखंडों के वन क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- **आवासीय स्वरूप (कुम्बा):** पर्यटन की दृष्टि से इनका सबसे बड़ा आकर्षण इनका आवास श्कुम्बाश् है। यह पत्तों और टहनियों से बना एक शंक्वाकार घर होता है, जो पूरी तरह से इको–फ्रेंडली (पर्यावरण के अनुकूल) होता है। शोध यह प्रस्तावित करता है कि इन कुम्बा बस्तियों को लाइव म्यूजियम के रूप में विकसित किया जा सकता है।
- **आर्थिक आधार और शिल्पः** बिरहोर चोप (जंगली लता) से मजबूत रस्सियाँ बनाने में निपुण होते हैं। उनकी यह लुप्त होती कला पर्यटकों के लिए हस्तशिल्प पर्यटन का एक दुर्लभ अनुभव प्रदान करती है।

मुंडा और उरांवः सामाजिक–सांस्कृतिक ताना–बाना

मुंडा और उरांव जनजातियाँ चतरा के सामाजिक परिदृश्य की रीढ़ हैं। इनका वितरण मुख्यतः लावालांग, प्रतापपुर और चतरा सदर प्रखंडों में है।

- **मुंडा शासन व्यवस्थाः** मुंडाओं की पढ़ा–पंचायत और खूँटकट्टी व्यवस्था राजनीतिक भूगोल के छात्रों और शोधार्थियों के लिए पर्यटन का एक बौद्धिक विषय है।
- **सांस्कृतिक उत्सवः** इनके पर्व जैसे सरहुल, करमा और सोहराय प्रकृति की पूजा पर आधारित हैं। इन उत्सवों के दौरान होने वाले सामूहिक नृत्य और पारंपरिक वाद्य यंत्रों (जैसे मांदर, नगाड़ा) की गूँज चतरा के पर्यटन को ''सांस्कृतिक गहराई'' प्रदान करती है।

आदिम जनजातियाँः परहिया और नगेसिया

चतरा के अत्यंत दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में परहिया जैसी जनजातियाँ निवास करती हैं, जिन्हें पहाड़ों का रक्षक माना जाता है।

- **पर्यटन क्षमताः** इनका जीवन पूर्णतः वनों पर आधारित है। इनके पास औषधीय पौधों का वह गुप्त ज्ञान है जो आधुनिक चिकित्सा के लिए एक शोध का विषय है। वेलनेस टूरिज्म के अंतर्गत इनके ज्ञान को पर्यटन से जोड़कर इन्हें आर्थिक लाभ पहुँचाया जा सकता है।

जनजातीय सांस्कृतिकः भाषा, भोजन और कला

पर्यटन केवल स्थलों का भ्रमण नहीं, बल्कि स्वाद और ध्वनियों का भी अनुभव है। चतरा की जनजातीय संस्कृति के तीन प्रमुख अंग इसे पर्यटन के लिए समृद्ध बनाते हैंः

- **भाषा विज्ञानः** यहाँ मुंडारी, कुडुख और सादरी भाषाओं का मिश्रण है। भाषा–विज्ञानी और नृवंशविज्ञानी पर्यटकों के लिए चतरा एक खुली पुस्तक के समान है।
- **भोजन संस्कृतिः** जनजातीय भोजन जैसे मडुआ की रोटी, धुस्का, पीठा, और सखुआ के पत्तों पर परोसा जाने वाला भोजन पर्यटकों के लिए एथनिक फूड एक्सपीरियंस का माध्यम है। हड़िया (चावल की शराब) का सांस्कृतिक महत्व भी शोध का एक रोचक पक्ष है।
- **भित्ति चित्र एवं सोहराय कलाः** संथाल और मुंडा जनजातियों द्वारा अपने मिट्टी के घरों पर की जाने वाली प्राकृतिक रंगों की चित्रकारी "विजुअल आर्ट टूरिज्म" के लिए एक बड़ी संभावना है।

जनजातीय क्षेत्रों का प्रादेशिक वर्गीकरण

अध्ययन की सुविधा हेतु चतरा के जनजातीय क्षेत्रों को तीन प्रमुख पर्यटन क्लस्टर्स में विभाजित किया जा सकता हैः

- **क्लस्टर 01 (पश्चिमी चतरा – लावालांग):** यहाँ वन्यजीव और मुंडा–उरांव संस्कृति का संगम है।
- **क्लस्टर 02 (पूर्वी चतरा – टंडवा/सिमरिया):** यह बिरहोर संस्कृति और औद्योगिक–जनजातीय संघर्ष व समन्वय का क्षेत्र है।
- **क्लस्टर 03 (उत्तरी चतरा – इटखोरी/हंटरगंज):** यहाँ प्राचीन ऐतिहासिक विरासत और जनजातीय लोक–जीवन का अनूठा मिलन है।

चतरा की जनजातीय जनसांख्यिकी केवल आँकड़े नहीं हैं, बल्कि यह एक जीवंत सांस्कृतिक परिदृश्य है। बिरहोरों की आदिम सादगी से लेकर मुंडाओं के संगठित सामाजिक ढांचे तक, चतरा में हर कदम पर पर्यटन की नई संभावनाएं छिपी हैं। यदि इन समूहों की विशिष्टताओं को संवेदनशीलता के साथ ब्रांड किया जाए, तो चतरा झारखंड का सबसे महत्वपूर्ण एथ्नो–ग्राफिक पर्यटन स्थल बन सकता है।

चतरा के प्रमुख पर्यटन स्थल–प्राकृतिक वैभव एवं जनजातीय समन्वय

1. **प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पारिस्थितिकीः** चतरा जिले का भौगोलिक स्वरूप पठारी और पहाड़ी है, जो इसे झारखंड के अन्य मैदानी जिलों से अलग करता है। यहाँ पर्यटन का आधार 'जल, जंगल और पहाड़' का त्रिकोण है। शोध की दृष्टि से चतरा के पर्यटन स्थलों की विशेषता यह है कि ये स्थल केवल निर्जन प्राकृतिक स्थान नहीं हैं, बल्कि ये स्थानीय जनजातियों की आस्था और आजीविका के केंद्र भी हैं। यहाँ के प्रत्येक जलप्रपात और गुफा के साथ कोई न कोई जनजातीय दंतकथा जुड़ी हुई है।
2. **लावालांग वन्यजीव अभयारण्य, जैव–विविधता और मानव–प्रकृति संबंधः** लावालांग अभयारण्य चतरा के पश्चिमी भाग में स्थित है और लगभग 407 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।

➢ **पर्यटन क्षमताः** यहाँ बाघ, तेंदुआ, भालू और हिरण जैसे वन्यजीव पाए जाते हैं लेकिन शोध का मुख्य बिंदु यहाँ रहने वाली जनजातियाँ हैं। अभयारण्य के भीतर और परिधि पर बसे मुंडा और उरांव समुदायों का वन प्रबंधन का पारंपरिक ज्ञान ''इको–टूरिज्म'' के लिए आधार प्रस्तुत करता है।

➢ **रणनीतिः** यहाँ नेचर ट्रेल विकसित की जा सकती है, जहाँ जनजातीय युवा पर्यटकों को वनों के औषधीय पौधों और वन्यजीवों के पदचिह्नों की पहचान करना सिखा सकें।

3. **जलप्रपातों का प्रदेशिक जालः** चतरा को जलप्रपातों का जिला कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ के प्रमुख जलप्रपात न केवल सुंदर हैं, बल्कि जनजातीय क्षेत्रों के बीच स्थित होने के कारण रूरल टूरिज्म का केंद्र बन सकते हैं।

➢ **गोवा जलप्रपात (जिलगा):** चतरा–हजारीबाग मार्ग पर स्थित यह जलप्रपात अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। इसके समीप जनजातीय बस्तियाँ हैं, जहाँ विलेज टूरिज्म की अपार संभावना है।

➢ **तमासीन जलप्रपातः** यह महानदी (स्थानीय नदी) पर स्थित है। यहाँ की विशेषता यह है कि यह सघन वनों के बीच एक गहरी घाटी का निर्माण करता है। यहाँ की चट्टानी संरचनाओं में प्राचीन जनजातीय शैल–चित्रों की संभावना पर शोध किया जा सकता है।

➢ **डुमेर–सुमेर और मालूदहः** ये जलप्रपात अपनी अनूठी बनावट के लिए जाने जाते हैं। मालूदह जलप्रपात एक गहरी गुफा जैसी संरचना बनाता है, जिसे स्थानीय लोग पवित्र मानते हैं।

4. **कौलेश्वरी पर्वत (कोल्हुआ पहाड़), धर्म और नृवंशविज्ञान का संगमः** हंटरगंज प्रखंड में स्थित कौलेश्वरी पर्वत एक अद्वितीय स्थल है जहाँ हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों के अवशेष मिलते हैं।

➢ **जनजातीय जुड़ावः** इस पहाड़ की तलहटी में रहने वाले जनजातीय समुदाय सदियों से इस पर्वत के रक्षक रहे हैं। वार्षिक मेलों के दौरान यहाँ की जनजातियों की भागीदारी, उनके पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रदर्शन और चढ़ावे की परंपरा पर्यटन को एक हाइब्रिड (धार्मिक, जनजातीय) स्वरूप प्रदान करती है।

5. **इटखोरीः विरासत पर्यटन का केंद्रः** इटखोरी का माँ भद्रकाली मंदिर परिसर चतरा का सबसे विकसित पर्यटन स्थल है।

➢ **सांस्कृतिक समन्वयः** इटखोरी महोत्सव के दौरान स्थानीय जनजातीय कलाकारों (बिरहोर, मुंडा) को मंच प्रदान किया जाता है। शोध का तर्क है कि यहाँ आने वाले धार्मिक पर्यटकों को कल्चरल वॉक्स के माध्यम से समीपवर्ती बिरहोर टांडा (जैसे टंडवा रोड पर स्थित बस्तियों) तक ले जाना चाहिए, ताकि पर्यटन का लाभ नीचे तक पहुँच सके।

पर्यटन स्थलों का श्रेणी, प्रमुख जनजातीय प्रभाव

पर्यटन स्थल	श्रेणी	प्रमुख जनजातीय प्रभाव
लवालांग	वन्यजीव / इको–टूरिज्म	मुंडा,, उरांव
तमासीन	प्राकृतिक / साहसिक	बिरहोर, संथाल
कोल्हुआ पहाड	धार्मिक / साहसिक	परहिया, नगेसिया
इटखोरी	धार्मिक / ऐतिहासिक	मुंडा, बिरहोर, संथाल
गोवा प्रपात	पिकनिक / प्रकृति	स्थानीय मुंडा समूह
मलूदह	प्राकृतिक / साहसिक	उरांव, खरवार

चतरा के प्राकृतिक स्थल और यहाँ की जनजातियाँ एक–दूसरे के पूरक हैं। पर्यटन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम इन स्थलों को केवल पिकनिक स्पॉट के रूप में देखते हैं या सांस्कृतिक अनुभव केंद्रों के रूप में। लावालांग से लेकर इटखोरी तक फैला यह प्रदेशिक जाल झारखंड के पर्यटन परिदृश्य को नई दिशा देने में सक्षम है।

चतरा में जनजाति पर्यटन की चुनौतियाँ एवं बाधाएँ

चतरा जिले के पर्यटन विकास में सबसे बड़ी ऐतिहासिक बाधा वामपंथी उग्रवाद रहा है। दशकों तक यह जिला लाल गलियारे का हिस्सा रहा, जिससे बाहरी पर्यटकों और निवेशकों के मन में असुरक्षा की भावना घर कर गई।

यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षा बलों के प्रभावी नियंत्रण और विकास योजनाओं के कारण उग्रवाद में भारी कमी आई है, लेकिन पर्यटन के लिए सुरक्षित चतरा की ब्रांडिंग अभी भी एक बड़ी चुनौती है। शोध का तर्क है कि जब तक पर्यटकों के मन से डर का माहौल समाप्त नहीं होगा, तब तक वास्तविक पर्यटन प्रवाह संभव नहीं है।

आधारभूत संरचना का अभाव

चतरा की भौगोलिक स्थिति दुर्गम है, और यहाँ का पर्यटन बुनियादी ढाँचा अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है:

- **कनेक्टिविटी:** लावालांग और तमासीन जैसे प्रमुख स्थलों तक पहुँचने के लिए संपर्क सड़कों की स्थिति दयनीय है। विशेषकर मानसून के दौरान जनजातीय क्षेत्रों का संपर्क कट जाता है।
- **आवास:** इटखोरी को छोड़कर पूरे जिले में पर्यटकों के ठहरने के लिए गुणवत्तापूर्ण होटल या लॉज की कमी है। जनजातीय क्षेत्रों में होम–स्टे की अवधारणा अभी कागजों तक सीमित है।
- **डिजिटल कनेक्टिविटी:** अधिकांश जनजातीय पर्यटन स्थलों पर मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट का अभाव है, जो आधुनिक पर्यटकों (विशेषकर युवाओं) के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।
- **सांस्कृतिक वस्तुकरण एवं निजता का खतरा:** जनजाति पर्यटन का एक काला पक्ष श्मानव चिड़ियाघर जैसी मानसिकता है। चतरा की बिरहोर जैसी आदिम जनजातियों के साथ पर्यटन विकसित करते समय यह जोखिम रहता है कि पर्यटक उनकी निजता का सम्मान न करें।
- **सांस्कृतिक क्षरण:** पर्यटकों की माँग पूरी करने के लिए जनजातीय नृत्यों और रीति–रिवाजों का फिल्मीकरण या बाजारीकरण उनकी मौलिकता को नष्ट कर सकता है।
- **जागरूकता और कौशल का अभाव:** स्थानीय जनजातीय समुदाय पर्यटन को अपनी आय का जरिया बनाने के लिए प्रशिक्षित नहीं हैं। उनके पास भाषाई कौशल और हॉस्पिटैलिटी (सत्कार) का पेशेवर ज्ञान नहीं है, जिससे पर्यटन का आर्थिक लाभ अक्सर बाहरी बिचौलियों के हाथों में चला जाता है।

रणनीतिक सुझाव एवं भविष्य की राह

झारखंड सरकार को एक एकीकृत चतरा ट्राइबल सर्किट घोषित करना चाहिए।

प्रस्तावित रूट: चतरा (प्रवेश) – गोवा प्रपात– लावालांग वन्यजीव भ्रमण – टंडवा (बिरहोर दर्शन)–सिमरिया (साहसिक पर्यटन)–इटखोरी (विरासत एवं समापन)।

समुदाय आधारित पर्यटन मॉडल

चतरा के लिए टॉप–डाउन मॉडल के बजाय बॉटम–अप मॉडल अपनाना चाहिए:

- **ग्राम पर्यटन समितियाँ:** प्रत्येक जनजातीय गाँव में एक पर्यटन समिति बनाई जाए जो होम–स्टे और गाइडिंग का शुल्क स्वयं निर्धारित करे।
- **बिरहोर संरक्षण पर्यटन:** बिरहोरों के पारंपरिक आवास (कुम्बा) के पास इंटरप्रिटेशन सेंटर बनाए जाएं, जहाँ बिरहोर स्वयं अपनी कला (रस्सी बनाना, लोक संगीत) का प्रदर्शन करें और लाभ प्राप्त करें।

पीएम–जनमन जैसी योजनाओं को पर्यटन से जोड़ा जाए। बिरहोरों के आवासों का विकास इस तरह हो कि वे अपनी मौलिकता न खोएं और पर्यटकों के लिए आकर्षक भी हों।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र यह सिद्ध करता है कि चतरा जिला झारखंड में जनजाति पर्यटन का पावरहाउस बनने की क्षमता रखता है। यहाँ का भौगोलिक परिदृश्य, बिरहोरों की आदिम जीवनशैली और अद्‌भुत जलप्रपात एक ऐसा नृवंशविज्ञान संकुल निर्मित करते हैं जो दक्षिण एशिया में दुर्लभ है।

अध्ययन का सारांश यह है कि चतरा में पर्यटन केवल राजस्व का साधन नहीं है, बल्कि यह शांति स्थापना का उपकरण भी हो सकता है। जब जनजातीय युवाओं के हाथों में तीर–धनुष या बंदूक के बजाय पर्यटकों का कैमरा और गाइड बुक होगी, तब चतरा का वास्तविक सामाजिक–आर्थिक कायाकल्प होगा। चतरा को छोटानागपुर के प्रवेश द्वार से आगे बढ़कर नृवंशविज्ञान पर्यटन के प्रवेश द्वार के रूप में विकसित करना समय की माँग है।

संदर्भ सूची

1. Census Handbook of Chatra (2011) Registrar General of India.
2. District Gazetteer of Chatra, Government of Bihar, Jharkhand.
3. झारखंड आर्थिक सर्वेक्षण (2025) वित्त विभाग, झारखंड सरकार।
4. Singh, S.K.(2021) Tribal Geography of Jharkhand, Bharti Publications, New Delhi.
5. Verma, A.(2019) Ecotourism and Sustainable Development in Chotanagpur Plateau, *Journal of Earth Science,* 12(2), p. 45–52.

****